भारतरत्न

संजय पटेल

उन्होंने बचपन में ही ठान लिया था कि मुझे एक नामी गायक बनना है

पिछले दिनों गायक पंडित भीमसेन जोशी को भारत रत्न देने की घोषणा हुई। भारत रत्न हमारे देश का सबसे बड़ा नागरिक सम्मान है। इस मौके पर तुम्हें उनके जीवन व गायिकी के बारे में बताते हैं...

धारवाड़ से सफर की शुरुआत...

पंडित भीमसेन जोशी का जन्म 14 फरवरी 1922 में कर्नाटक में हुआ था। अपने छोटे-से गाँव के मन्दिर में होने वाले भजन और कीर्तन भीमसेन के मन को बहुत छूते थे। उनकी माँ एक अच्छी गायिका थीं और पिता गुरूराजजी नामी शिक्षक थे। दादा भीमाचार्य जानेमाने संगीतज्ञ थे। गायन में उनकी रुचि अपनी माँ के कारण हुई। यह देख सात साल की उम्र में घर पर उनकी संगीत-शिक्षा शुरू कर दी गई। शिक्षक थे – चिन्नप्पा कुर्तकोटी नाम के धोबी। वे गाते तो ठीक थे लेकिन गाँव की एक दुकान में बजने वाले उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब के एक रिकॉर्ड ने भीमसेन को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने ठान लिया कि गाना तो ऐसा ही गाना है। इसके लिए चाहे घर ही छोड़ना पड़े। वह रिकॉर्ड था – राग बसन्त में एक ख्याल "फगवा ब्रिज देखन को चलो री" और राग झिंझोटी में ठुमरी "पिया बिन नहीं आवत चैन" का। उस वक्त वे दस-बारह बरस के रहे होंगे।

खैर, किशोर भीमसेन घर में किसी को कुछ बताए बिना निकल पड़े ग्वालियर के लिए। न पास में पैसे, न पहचान, न रेल का टिकिट। रेल में गाकर उन्होंने साथी यात्रियों का मन मोह लिया। उनसे कुछ खाने को भी मिल जाता। टिकिट न होने से उन्हें ट्रेन से उतार भी दिया गया। खैर, किसी तरह रुकते-भटकते ग्वालियर पहुँचने में उन्हें तीन महीने लग गए। वहाँ जाने-माने सरोद वादक उस्ताद हफीज़ खाँ साहब से और माधव संगीत विद्यालय में संगीत की शिक्षा ली। कुछ समय बाद उनका मन वहाँ से उचटने लगा। वे एक बार फिर निकल पड़े – बिना टिकिट। पहले दिल्ली फिर जालंधर

पहुँचे। यहाँ उन्होंने मंगत राम के संगीत विद्यालय से ध्रुपद-धमार की शिक्षा ग्रहण की।

भीमसेनजी कहते हैं कि यहाँ उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला। यहाँ संगीत की उनकी समझ और गहरी हुई। यहाँ खूब संगीत था, अच्छा खाना था और शारीरिक तन्दुरुस्ती पर भी बहुत ज़ोर दिया जाता था। कुछ समय बाद पं. विनायकराव पटवर्धन ने उनसे कहा कि तुम्हारे पुश्तैनी ज़िले धारवाड़ के गाँव कुंडगोल में पं. सवाई गंधर्व जैसे महान गुरू हैं। तुम उनके पास जाओ। बालक भीमसेन को याद आया कि 1932 में अपने गाँव में उसने सवाई गंधर्व का गायन सुना था और सोचा था कि मैं इनसे गाना सीखूँ।

वे जब सवाई गंधर्व से धारवाड़ में मिले तो 13 साल के थे। पं. सवाई गंधर्व ने उनकी कठिन परीक्षा ली। भीमसेन जी कहते हैं कि शुरू के दो साल तक उन्होंने मुझे गाना सिखाया ही नहीं। घर का काम करने के साथ-साथ मैं बस गुरूजी का गाना सुनता रहता और उन्हीं की तरह गाने की कोशिश करता। दो साल बाद मेरी शिक्षा शुरू हुई। सिखाने का उनका अपना तरीका था। पहले वो गला तैयार करवाते थे। सुबह-शाम एक-एक घण्टे की साधना पाँच साल तक चली।

गुरू के घर रहने से मुझे उनका दस-बारह घण्टे का रियाज़ रोज़ सुनने को मिलता। इससे मुझे बहुत लाभ मिला। वे एक बार में बहुत सारा कभी नहीं सिखाते थे। जो राग सिखाना हो उसे पहले वो खुद गाते। हम ध्यान से उन्हें सुनते। बाद में वे उसका एक-एक टुकड़ा देते और गति आने तक हमसे गवाते रहते। वे मुझे सुबह जल्दी उठाते। सबसे पहले हम 3-4 घण्टे व्यायाम करते फिर लगभग 9 घण्टे तक रियाज़ करते। बीच-बीच में वे कहते रहते, "अभी बात नहीं बनी। तुम अभी भी सोच लो भीमसेन यह गाने-बजाने का मामला बड़ा टेढ़ा है। तुम चाहो तो अभी भी घर लौट सकते हो।" लेकिन भीमसेन कहाँ मानने वाले थे! वे भिड़े रहे और सुध-बुध भूलकर बस रियाज़ करते रहे। ऐसा तीन साल तक चला। भीमसेन कहते हैं कि इन सालों में उन्होंने मुझे कुल तीन राग सिखाए – टोड़ी, मुलतानी और पूरिया। अगर राग पक्के हो जाएँ तो पास के राग अपने आप ही आ जाते हैं।

जब पं. सवाई गंधर्व ने महसूस किया कि भीमसेन गाने के प्रति गम्भीर हैं तो वे उन्हें अपने साथ कार्यक्रमों में ले जाने लगे और गाने का मौका देने लगे। गुरू के साथ बैठकर गाने से उनमें एक अद्‌भुत आत्म-विश्वास पैदा हुआ।

इसके बाद पं. भीमसेन जोशी ने गायन को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। सन छियालिस में अपने गुरू की अस्वस्थता के कारण भीमसेनजी को एक कार्यक्रम में गाना पड़ा। उन्होंने राग मल्हार गाया और बस छा गए। वे अपने गुरू के नाम पर पिछले पचास सालों से पुणे में पं. सवाई गंधर्व संगीत समारोह का आयोजन कर रहे हैं। देश-विदेश से श्रोता और कलाकार इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में भाग लेने आते हैं। हर साल यह आयोजन दिसम्बर महीने में होता है।

जैसे ही मन्ना डे को संगीतकार शंकर-जयकिशन ने बताया कि आपको भीमसेनजी के साथ एक गाना गाना है तो घबराकर वे मुम्बई से दूर लोणावाला भाग गए। बाद में बड़ी समझाइश के बाद वे इस बात के लिए राज़ी हुए कि फिल्म में इस गायन मुकाबले में आपको भीमसेनजी को पराजित करते दिखाया जाएगा।

संगीत में घराने

हमारे देश में शास्त्रीय संगीत की परम्परा का विकास विभिन्न घरानों द्वारा हुआ है। हर घराने की अपनी खास गायन शैली होती है जिसमें सुरों को साधा जाता है। यही उस घराने की पहचान बन जाती है। गुरू अपने शिष्यों के स्वर को लगातार साधता है, विकसित करता है। गुरू के शहर के नाम पर घरानों के नाम रखे जाते हैं। शिष्य अपने घराने का प्रतिनिधित्व करते हैं। संगीत के कुछ प्रतिष्ठित घराने हैं – ग्वालियर, जयपुर, पटियाला, किराना (कुरूक्षेत्र-हरियाणा के पास की एक जगह), आगरा घराना आदि। पं. भीमसेन जोशी किराना घराने के प्रतिनिधि गायक हैं। उनके गुरू पं. सवाई गंधर्व और पं. गंधर्व के उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब किराना घराने के अग्रणी कलाकार थे। खाँ साहब किराना गाँव से धारवाड़ गए और वहीं बस गए। वे ही इस घराने के संस्थापक हैं। भीमसेनजी ने कई रागों की रचना की है। जैसे कलाश्री, मारवा-श्री, ललित-भटियार आदि। पंडितजी किराना घराने का होने में गर्व महसूस करते हैं। फिर भी वे कहते हैं कि घराने की सीमा से ऊपर उठने पर ही कलाकार बड़ा बनता है। दूसरे घरानों की खासियतों को ग्रहण करने के लिए उसे क्रांतिकारी बनना पड़ता है। जो भीमसेनजी ने अपनी गायकी में बखूबी किया।

जंगल में जमी महफिल...

गायन के अलावा पंडितजी को क्रिकेट और कार चलाने का भी बेहद शौक है। उनके पास बरसों तक मर्सीडीज़ कार थी। भारत भर में अपने कार्यक्रमों में वे खुद ही कार चलाकर जाया करते थे। एक बार ग्वालियर के पास से गुज़रते हुए बीहड़ों में भीमसेनजी का सामना डाकुओं से हुआ। गर्मियों के दिन थे और भीमसेनजी ने लुंगी और बनियान पहन रखी थी। पंडितजी का शरीर शुरू से कसावट भरा रहा है। डाकुओं ने परिचय पूछा तो उन्होंने बताया कि वे गायक हैं। गाड़ी में तानपुरा और हारमोनियम देखने के बाद ही डाकुओं को उनके कहे पर यकीन हुआ। वे बोले कि हम आपको जाने देंगे लेकिन आपको हमें गाना सुनाना होगा। वे करते भी क्या! फिर क्या था जंगल में महफिल जमी।

फिल्मी गायन...

पं. भीमसेन जोशी फिल्मों में भी गा चुके हैं। फिल्म *बसन्त बहार* के लोकप्रिय गीत "केतकी गुलाब जुही चंपक बन फूले" में उनके साथ जाने-माने गायक मन्ना डे की आवाज़ भी है। इससे जुड़ी एक मज़ेदार बात है – जैसे ही मन्ना डे को संगीतकार शंकर-जयकिशन ने बताया कि आपको भीमसेनजी के साथ एक गाना गाना है तो घबराकर वे मुम्बई से दूर लोणावाला भाग गए। बाद में बड़ी समझाइश हुई कि इस गायन मुकाबले में आपको भीमसेनजी को पराजित करते दिखाया जाएगा। बस, मन्ना डे तैयार हो गए।

सादा जीवन जीने वाले पंडित भीमसेन जोशी शोहरत और नाम से बेखबर रहने वाले स्वर साधक हैं। जब तुम ये पंक्तियाँ पढ़ रहे होगे तब यकीनन दुनिया में कहीं न कहीं भीमसेन जी का गाना बज रहा होगा। "मिले सुर मेरा तुम्हारा" और "देस राग" जैसी राष्ट्रीय प्रस्तुतियों में पंडित भीमसेन हमारे देश के "आइकॉन" के रूप में नज़र आते हैं। भीमसेनजी पर तीन फिल्में भी बनी हैं। पहली फिल्म हॉलैण्ड के एक व्यक्ति ने बनाई है। दूसरी फिल्म *राग मियाँ मल्हार* है और तीसरी फिल्म गुलज़ार ने बनाई है। भारतरत्न के पहले उन्हें पद्मश्री, पद्म-भूषण और पद्म-विभूषण से नवाज़ा जा चुका है। उनके पिता ने भीमसेनजी के जीवन पर एक किताब भी लिखी है – *नादपुत्रा*। पिता का अपने बेटे पर किताब लिखने के उदाहरण बिरले ही होंगे!